९

असाम्प्रदायिक मसीहियत:

पापों की क्षमा

सचमुच में भले मन वाले कुछ लोग बपतिस्मे पर आत्मा की स्पष्ट शिक्षा को इसलिए नहीं समझ पाते हैं क्योंकि उन्हें डर होता है कि इसमें बपतिस्मे पर आवश्यकता से अधिक ज़ोर दिया गया है जिस कारण मसीह के लहू की सामर्थ को कम महत्व मिलता है।

परमेश्वर की स्पष्ट शिक्षा के परिणामों पर निर्णय देने का हम इन्सानों को कोई अधिकार नहीं है। तो भी हम इस बात पर सुनिश्चित हो सकते हैं कि बपतिस्मे पर आत्मा की शिक्षा को इसका स्वाभाविक तथा स्पष्ट अर्थ देने का यह अर्थ कतई नहीं है कि शुद्ध करने की लहू की सामर्थ का महत्व कम किया जा रहा है। हर आज्ञाकारिता स्वीकार्य हो सकती है, क्योंकि वास्तव में लहू में विश्वास की ओर ले जाने वाली आज्ञाकारिता आवश्यक है। "उसके लहू के कारण जो विश्वास करने से कार्यकारी होता है" (रोमियों 3:25)। मेमने के लहू की शुद्ध करने वाली सामर्थ के सामने झुककर और उसे देखकर, हम परमेश्वर की आज्ञा मान सकते हैं। क्योंकि यही एक ढंग है जिसमें हम वास्तविक रूप में आज्ञा मानते हैं। आज्ञाकारिता में किसी भी प्रकार अपने आप में या स्वयं हमें बचाने की कोई सामर्थ नहीं है।

विश्वास भी बपतिस्मे की तरह ही हमें बचाने में असहाय है। या यूं कहें कि बिना लहू के आशीष पाने के लिए यह व्यर्थ प्रयास है। विश्वास केवल हमारे प्रभु की लज्जाजनक परन्तु महिमामय मृत्यु से ही कार्यकारी होता है।

पापियों के उद्धार के लिए परमेश्वर को मसीह को मरने के लिए भेजना पड़ा। परमेश्वर, जैसे झूठ नहीं बोल सकता, वैसे ही वह अन्यायी भी नहीं हो सकता। इसलिए परमेश्वर ने मसीह को "प्रायश्चित ठहराया, ... कि जिस से वह आप ही धर्मी ठहरे, और जो यीशु पर विश्वास करे, उसका भी धर्मी ठहराने वाला हो" (रोमियों 3:25, 26)। वास्तव में, यीशु के क्रूस पर मरने की अनुमति देकर परमेश्वर अनुग्रह का अर्थात एक ऐसा द्वार खोल रहा था जो उसकी मृत्यु के बिना नहीं खोला जा सकता था। वह हज़ारों लोगों के प्रति करुणा रखता था और उसका असीमित मन दया से भरा हुआ था; पर वह यह दया धर्मियों व पापियों दोनों पर एक साथ नहीं कर सकता था। फिर यीशु की मृत्यु ने परमेश्वर के लिए सब पापियों का उद्धार करना सम्भव बनाया। इस लहू के सिवाय पापियों के उद्धार के लिए कोई और शर्त स्वीकार्य नहीं हो सकती थी। बिना मसीह के लहू के मनुष्य चाहे कुछ भी विश्वास कर लेता,

परमेश्वर उसका उद्धार नहीं कर सकता था। वरन, अपने बच्चे का लहू बहाकर वह मनमानी कर रहा होता, जब वह बच्चा रो रोकर पिता से भीख मांग रहा था कि यदि हो सके तो वह उसका लहू न बहाए। नहीं, नहीं, मेरे प्रिय, पापियों को बचाने के लिए जितना दाम चाहिए तो उससे अधिक देने के लिए परमेश्वर ने अपने आपको नहीं दिया।

अभी भी जब हम लोगों को यह सिखाते हैं कि उद्धार विश्वास से होता है और मन न फिराने वालों का नाश हो जाएगा। हम उस बहुत बड़े दाम को कम करके नहीं आंक रहे होते जिसे परमेश्वर ने अपने आप चुकाया था। ज़्या पौलुस ने हमारे प्रभु की विजयी मृत्यु को कम करके आंका, जब उसने रोमियों 10:9 में कहा था, ''यदि तू अपने मुंह से यीशु को प्रभु जानकर अंगीकार करे और अपने मन से विश्वास करे, कि परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जिलाया, तो तू निश्चय उद्धार पाएगा''? यह भय रखने वाले से कि बपतिस्मे की स्पष्ट शिक्षा यीशु की मृत्यु के महत्व को कम करती है, पौलुस की इस शिक्षा का इन्कार नहीं करता। उद्धार के लिए यीशु को मुंह से अंगीकार करके अपना प्रभु मानने की शर्त इस प्रेरित ने ही रखी थी। फिर उस अच्छे और सच्चे नाम से, प्रभु यीशु मसीह का अपने मुंह से अंगीकार करने से उद्धार कैसे मिल सकता था? निश्चय ही इस कार्य में ऐसा कुछ नहीं है जो अपने आप उद्धार दिला सके। यदि ऐसा हो सकता, तो जितनी बार अंगीकार करो उतनी बार उद्धार हो सकता था।

इस उदाहरण पर विचार करें। फसल की उपज के लिए बीज बो कर उसकी देखभाल करना आवश्यक है; इससे फसल पैदा होती है और कम देखभाल करने पर कम फसल मिलती है। जितनी अधिक खेती होगी उतनी ही अधिक ऊपज होगी। जितनी अधिक देखभाल होगी उतनी ही फसल अधिक होगी। योजनाबद्ध तथा वैज्ञानिक ढंग से और भी अधिक फसल होती है। फसल की देखभाल करना हर तरह से लाभदायक होता है। यीशु को प्रभु मानना पापी व्यक्ति के उद्धार में लाभदायक है, परन्तु फसल की जैसे देखभाल से उपज बढ़ती है वैसे *नहीं*। इससे उद्धार के लिए कैसे सहायता मिलती है? अंगीकार करना तभी लाभदायक हो सकता है जब इसमें लहू से सामर्थ ली जाए। अन्य शब्दों में यह आत्मा को जोड़ने या लहू के सम्पर्क में लाने में सहायता करता है।

इसलिए जब पतरस ने कहा, ''और उसी पानी का दृष्टांत भी, अर्थात बपतिस्मा, यीशु मसीह के जी उठने के द्वारा, अब तुम्हें बचाता है; (उससे शरीर के मैल को दूर करने का अर्थ नहीं है, परन्तु शुद्ध विवेक से परमेश्वर के वश में हो जाने का अर्थ है)'' (1 पतरस 3:21), तो वह अपने प्रभु के लहू के महत्व को कम नहीं कर रहा था। बल्कि वह उद्धार करने की उसकी सामर्थ को दिखा रहा था। उस विश्वास, मन फिराव, अंगीकार, और बपतिस्मे का जिसमें उद्धार की कोई सामर्थ या गुण न हो ऐलान करने का अर्थ है कि उन्हें लहू की सामर्थ से जुड़े लहू के साथ उनके सम्पर्क के द्वारा उद्धार करने की सामर्थ दी गई है। ये साधारण कार्य केवल और केवल लहू के दाग़ लगे होने के कारण परमेश्वर की आज्ञाकारिता बनते हैं। वह लहू किसी बकरे या किसी और का नहीं बल्कि हमारे प्रभु का है। निश्चय ही ऐसी सामर्थ के साथ जोड़ने का अर्थ मसीह के लहू के महत्व को कम करना नहीं है। आइए हम लहू से हर गुण लेने वाली

और आज्ञाकारिता के काम के प्रति गंभीर किसी भी स्पष्ट शिक्षा से डरें या भागे नहीं।

परमेश्वर ने लहू के द्वारा विश्वास करने, मन फिराने और अंगीकार करने के साधारण कार्यों को पवित्र किया है। उसने लहू के द्वारा इन कार्यों को गुणकारी बनाया है, जबकि उनमें से किसी का भी लहू से अलग होकर कुछ महत्व नहीं था। यदि किसी प्रकार उसने हमारे प्रभु के लहू की उद्धार करने वाली सामर्थ से लेकर इसके बिना काम किया है, तो ज़्या वह किसी के मन के विश्वास को व्यज़्त करने के रूप में जल में देह के गाड़े जाने के सरल कार्य के साथ ऐसा नहीं कर सकता था? यदि वह लहू की उद्धार करने की सामर्थ को कम किए बिना विश्वास करने, मन फिराने और अंगीकार करने का महत्व जोड़ सकता था, तो यही बात वह बपतिस्मे के सज़्बन्ध में भी कर सकता था। इस बात को वही लोग समझ सकते हैं जो जानते हैं कि उसकी इच्छा ज़्या है।

अपने विचारों और पहले से बैठी भावनाओं को मन से निकाल दें! अपनी दलीय भावना और उन विचारों को निकाल दें कि किसी विशेष दल की रुचि के अनुसार आत्मा को ज़्या करना चाहिए था। इनका सच्चाई से कोई सज़्बन्ध नहीं है। हम केवल इतना ही पूछें कि परमेश्वर ने ज़्या कहा है और उसका कहने का ज़्या अर्थ है?

पिछले पाठ में, हमने पिन्तेकुस्त के दिन पतरस के संदेश के अर्थ पर तीन प्रसिद्ध विद्वानों की टिप्पणियों पर विचार किया था। ये तीनों विद्वान इस बात से सहमत हैं कि पतरस पापों की क्षमा पाने के लिए मन फिराने और बपतिस्मे की शिक्षा दे रहा था और यह कि परमेश्वर ने अपने पवित्र आत्मा से पतरस में, लोगों को वास्तव में उनके पापों की क्षमा पाने के लिए बपतिस्मा लेने की शिक्षा दी थी। मेरा मानना है कि कोई भी विद्वान इस बात से इन्कार नहीं करेगा कि पतरस की भाषा का सबसे स्वाभाविक और स्पष्ट अर्थ यही है। जहां तक मैं बता सकता हूं, किसी विशेष शिक्षा के पक्षधर या किसी विशेष गुट का समर्थन करने वाले ही इस स्पष्ट अर्थ से इन्कार करेंगे।

प्रसिद्ध बेपटिस्ट विद्वान जेज़्स डज़्ल्यू. विलमर्थ, जिसका उद्धरण मैंने पहले दिया था, ने कहा था:

> कैज़्पबेलवाद, वह भूत जो बहुत से भले लोगों को सताता और उनकी गलत व्याज़्या के कारण आतंकित करता है, गलत व्याज़्या को मानते रहकर और कैज़्पबेलियों को सच्चाई के योद्धा बनाने की अनुमति देकर, जिसमें संसार के विद्वान उनके पक्ष में और हमारे विरोध में हो जाएं ज़्या हमें कुछ मिल सकता है?[1]

सच्चाई से प्रेम करने वाले सब लोगों को आनन्द करना चाहिए कि मिस्टर विलमर्थ जैसे लोग विद्वता तथा सच्चाई को किसी गुट से ऊपर मानते हैं। दलीय भावना के बावजूद ऐसे लोग परमेश्वर के वचन की सही व्याज़्या देने के लिए काफ़ी हैं। ...

पतरस ने पश्चाज़ापी विश्वासियों को बपतिस्मा लेने के लिए कहा था ताकि उनके पाप धुल जाएं। ... मुझे यकीन है कि इस शिक्षा को मसीही अर्थात केवल मसीही होकर ही माना जा सकता है; ज़्योंकि पतरस एक मसीही अर्थात केवल एक मसीही था और वह यही

विश्वास करता और सिखाता था। किसी गुट या शिक्षक द्वारा लोगों को असाज़्प्रदायिक शिक्षा देने पर मैं सचमुच बहुत खुश होता हूं। यहां पर मैं कहना चाहूंगा कि ऐसी शिक्षा सचमुच उन लोगों द्वारा दी जाने वाली बाइबल की शिक्षा से मेल खाती है जो केवल मसीही बनने के प्रयास में हैं जिसमें वे किसी साज़्प्रदायिक कलीसिया के नहीं बल्कि उद्धार पाने के समय प्रभु द्वारा परमेश्वर की कलीसिया में मिलाए जाते थे। यदि सब निष्कपट मन के लोग अपनी हर शिक्षा को असाज़्प्रदायिक बना दें तो कितनी खुशी की बात होगी! यदि मसीह में विश्वास करने वाला हर गंभीर व्यज़्ति इस स्पष्ट व्याज़्या को मानकर बपतिस्मे को डुबकी के रूप में सिखाए तो वह संसार के किसी भी असाज़्प्रदायिक मसीही के साथ ''एक मन और एक चिज़्'' हो सकता है।

केवल मसीही बनने के लिए ज़्या हम ''दलों,'' ''गुटों'' और साज़्प्रदायिक कलीसिया का त्याग करने को तैयार हैं? ज़्या हम परमेश्वर की संतान बनने के लिए कुछ भी करने को तैयार हैं? याद रखें कि असाज़्प्रदायिक प्रचारक होने के लिए, वही प्रचार करना आवश्यक है जिसकी आज्ञा पतरस ने पापों की क्षमा के लिए बपतिस्मा लेने के लिए दी थी। ऐसा सिखाने वाला किसी मनुष्य की शिक्षा की नहीं बल्कि मसीह की शिक्षा की वकालत कर रहा है। यदि कोई इस शिक्षा को मसीह की शिक्षा के अलावा कोई और नाम देता है तो वह मसीह और उसकी शिक्षा को गलत रूप में पेश कर रहा होता है। मसीह ने इस शिक्षा को अपने लहू से संजोया है; इसलिए यह उसी की शिक्षा है और सारा सज़्मान तथा आदर उसी को मिलना चाहिए।

पाद टिप्पणी

[1]जेज़्स डज़्ल्यू. विलमर्थ, *बेपटिस्ट ज़्वार्टरली* (जुलाई 1877): 304-05 में।